RNI No - RAJHIN/2003/9899 :: Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 November 2018 :: Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd November 2018

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : सोलहवां | अंक : सातवां | नवम्बर–2018

5 सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
भक्ति का मौका
(कबीर साहब की बानी) मुम्बई

17 परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
चार्जिंग

27 सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा भजन में बिठाने से पहले
परमात्मा की भक्ति

31 (नया शब्द)
मुद्दत होई यार विछुड़याँ

32 (नया शब्द)
ऐस दिल नूं मैं किंझ समझावां

33 (नया शब्द)
दु:ख कीनूं दस्सां

34 16 पी.एस. आश्रम और मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम
धन्य अजायब

संपादक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71
80 79 08 46 01

उप संपादक
नन्दनी

विशेष सलाहकार
गुरमेल सिंह नौरिया
96 67 23 33 04
99 28 92 53 04

सहयोग
परमजीत सिंह

पृष्ठ सज्जा
राजेश कुक्कड़

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिंट टुडे, नारायणा,
नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039
जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। मूल्य : ₹5/-
e-mail : dhanajaibs@gmail.com 200 Website : www.ajaibbani.org

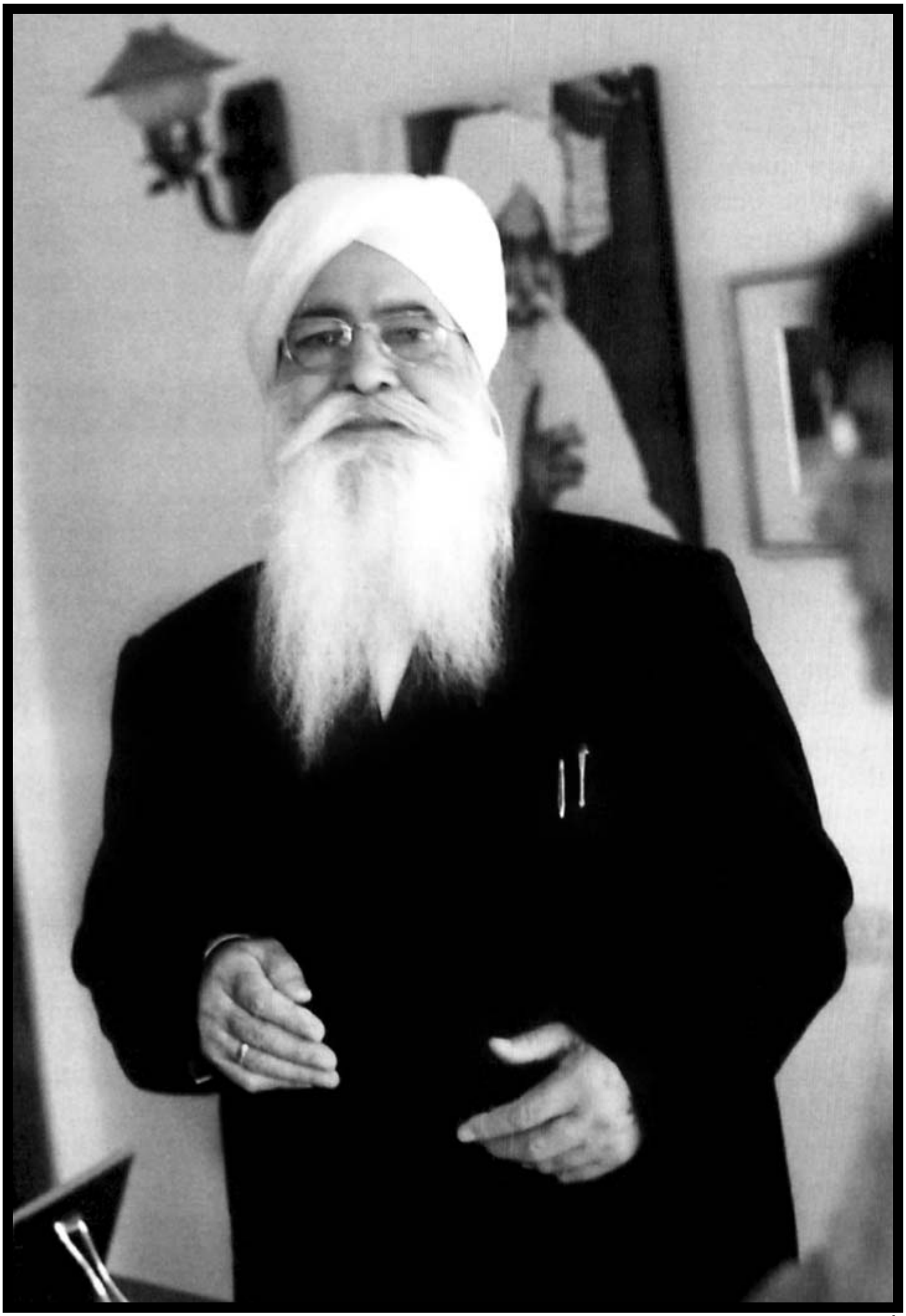

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

भक्ति का मौका

कबीर साहब की बानी DVD-574 मुम्बई

मैं अपने गुरुदेव परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में साँस-साँस के साथ नमस्कार करता हूँ, जिन्होंने इस गरीब तपती हुई आत्मा के ऊपर नाम का छींटा मारकर शान्ति बख्शी अपना प्यार बख्शा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

फिरत फिरत प्रभ आयो, परया तू शरणाए।
नानक की प्रभ बेनती, अपनी भक्ति लाए।।

मैं फिरता-फिरता थक गया, चूर हो गया। मैंने हर जगह जल में, थल में तेरी खोज की अब हार कर तेरी शरण में आया हूँ। मैं सिर्फ भक्ति का दान माँगता हूँ तू मुझे अपनी **भक्ति का मौका** दे।

आपके आगे परम सन्त परमात्मा कबीर साहब की बानी रखी जा रही है, यह बानी गौर से सुनने वाली है। कबीर साहब पहले सन्त थे जो संसार में आए, आप चारों युगों में आए। सतयुग में आपका नाम सतसुकृत, त्रेता में करूणामय, द्वापर में मनिन्द्र और कलयुग में कबीर पड़ा। आप कभी भी इंसानी जामें से नीचे नहीं गए, आप कुलमालिक थे।

आप अनुराग सागर में पढ़ते हैं उसमें जिन प्रेमियों के साथ कबीर साहब का मिलाप हुआ बेशक उस जमाने में तो बहुत लोग थे लेकिन आज के जमाने में दुनिया की नफरी ज्यादा है। सन्त-महात्मा सारे संसार को अपना घर समझते हैं, सब समाजों को अपनी समाज समझते हैं। महात्मा न तो निन्दा करने के लिए आते हैं और न ही किसी की निन्दा करते हैं।

महात्मा संसार में आकर सच का होका देते हैं। जिन लोगों ने परमात्मा के नाम पर दुकानदारी चलाई होती है, वे लोग महात्माओं पर ताना कसते हैं कि ये पाखंड करते हैं लेकिन सन्त उन्हें भी प्यार से समझाते हैं कि प्यारेयो! हम आपको जिसके साथ जोड़ रहे हैं वह आपके लिए भी उतना ही जरूरी है जितना आम पब्लिक के लिए है। परमात्मा सबके अंदर है और हर एक परमात्मा से मिलने का हकदार है अगर हम इंसानी जामें में परमात्मा से नहीं मिले तो पता नहीं कहाँ जाकर जन्म हो जाए!

कबीर साहब इस शब्द में बताते हैं अगर राम-राम कहने से राम मिलता हो तो सबको राम मिल जाना चाहिए था शान्ति हो जानी चाहिए थी। अगर रोटी-रोटी कहने से पेट भरता होता, शान्ति आती होती तो सबकी मुक्ति हो जाती। तोता इंसान की संगत में आकर राम-राम बोलना शुरू कर देता है लेकिन उसे राम की महिमा का ज्ञान नहीं होता। जब वही तोता उड़कर जंगल में चला जाता है तो राम लफ्ज को भूल जाता है।

इसी तरह जो लोग बाहरमुखी पढ़ाई में मुक्ति समझते हैं वे जितनी देर ग्रंथ बगीचे में सैर करते हैं उतनी देर खूब आनन्द भोगते हैं लेकिन जब ग्रंथ पढ़ने से हट जाते हैं तो उनके अंदर वही काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ठाठें मारता है। जिस तरह तोता बाहर जाकर राम की महिमा भूल जाता है इसी तरह उन्होंने जो कुछ पढ़ा होता है वे बाहर जाकर उसे बिसार देते हैं कि उन्होंने क्या पढ़ा था, हमारे अंदर जो बुरी आदतें हैं ये क्यों नहीं छूटती?

सन्त पढ़ने को बुरा नहीं कहते। वही पढ़ाई फायदेमंद है जो उसे समझकर पढ़ता है, उस पर अमल करता है। पढ़ना इस तरह

है जैसे हम किसी बर्तन की सफाई करते रहें लेकिन उसमें कोई वस्तु न डालें तो सारी जिंदगी बर्तन को घिसाने से क्या फायदा?

महात्मा के ग्रंथ-पोथियों में नाम की महिमा है, सतगुरु की महिमा है क्योंकि सतगुरु के बिना नाम नहीं मिलता, नाम के बिना मुक्ति नहीं। फिर उस वातावरण की महिमा गाई है जिसे महात्मा सतसंग कहते हैं उसके बाद उस पर चलने की मेहनत करने की महिमा गाई है। परमात्मा की भक्ति करने के लिए पढ़े हुए या अनपढ़ का कोई फर्क नहीं पड़ता। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जो प्राणी गोविंद ध्यावे, पढ़ या अनपढ़ या परमगति पावे।

गुरु नानकदेव जी तो यहाँ तक कहते हैं अगर पढ़ा-लिखा किसी की निंदा करता है या किसी से नफरत करता है तो वह भी अनपढ़ की तरह विषय-विकारों में मस्त है।

नानक ते नर असल खर जो बिन गुण गर्व करंत।

गुरु नानक साहब कहते हैं कि वह बोलता तो इतना है जैसे बहुत जानकार हो लेकिन उसके अंदर दुनियादारों की तरह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार खत्म नहीं हुआ और न ही निन्दा-चुगली छूटी। वह असली गधा है जिसकी पीठ पर किताबों का बहुत बोझ लदा हुआ है लेकिन उसे किताबों का कोई ज्ञान न हो। आप पवित्र आसा जी की वार पढ़ते हैं जिसमें एक खास श्लोक है:

पढ़ या होवे गुनाहगार ता उम्मी साध न मारिए।
पढ़ या ते उम्मियां विचार अग्गे विचारिए।।

पंडित बाद बेद से झूठा। पंडित बाद बेद से झूठा।
राम के कहे जगत तरि जाई। खाँड कहे मुख मीठा।।

आप प्यार से कहते हैं कि महात्मा का उपदेश सारे संसार के लिए होता है लेकिन हम महात्माओं के नाम पर समाज खड़ी करके उसे जिला, राज्य या खास मुल्क के अंदर बंद करके लोगों के साथ लड़ते-झगड़ते हैं। जिन आत्माओं ने सन्तों की बानी से फायदा उठाना होता है हम उन्हें सन्तों से दूर कर देते हैं। इससे ज्यादा हम उन मालिक के प्यारों के साथ क्या बेइंसाफी करेंगे?

किसी भी सन्त ने यह नहीं कहा कि नाम के बिना मुक्ति हो जाएगी या परमात्मा आपको बाहर से मिल जाएगा। सब महात्माओं ने यही कहा है कि परमात्मा आपकी देह और वजूद में है, आप अंदर जाकर परमात्मा से मिल सकते हैं। हिन्दुओं में पुरातन चार वेद, अठारह पुराण, खट शास्त्र और सत्ताईस स्मृतियाँ हैं लेकिन किसी भी शास्त्र में यह नहीं लिखा कि आप परमात्मा के नाम के बिना मुक्त हो जाएंगे, आपको सन्त-सतगुरु के बिना नाम मिल जाएगा या सतसंग के बिना आपको समझ आ जाएगी।

सिमृत वेद पुराण पुकारण पोथियां।
नाम बिना सब कूड़ गाली होछियां।
नाम निधान अपार सन्ता संग वसे।।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि वह नाम सन्तों के अंदर निवास करता है। सन्तों ने अपने गुरु की दया से नाम को प्रकट कर लिया है और हमारे अंदर वह नाम प्रकट नहीं है। जो सन्तों की संगत में जाकर नामदान प्राप्त कर लेते हैं अंदर जाते हैं उनके जन्म-मरण का दुख समाप्त हो जाता है; अज्ञानता का अंधेरा दूर हो जाता है। बहरा भी कान के अंदर का राग-शब्द सुनना शुरू कर देता है।

आपके कहने का भाव इतना ही है अगर राम-राम कहने से दुनिया तर जाती तो सबको तर जाना चाहिए था। आज दुनिया में

कोई झगड़ा-बखेड़ा ही न होता। अगर चीनी-चीनी कहने से मुँह मीठा हो जाता तो चीनी बनाने की, इतनी मेहनत करने की क्या जरूरत थी? सिर्फ चीनी कह लेने से ही मुँह मीठा हो जाता।

पावक कहे पाँव जो जरई, जल कहे त्रिषा बुझाई।
भोजन कहे भूख जो भागै, तब दुनिया तरि जाई।।

कबीर साहब इस शब्द के अंदर बहुत अच्छी-अच्छी मिसालें देकर समझाते हैं कि आग का नाम लेने से ही पैर नहीं जलते अगर भोजन कहने से भूख समाप्त होती तो दुनिया तर जाती क्योंकि पेट की खातिर ही हम परमात्मा का नाम भुलाते हैं, पेट की खातिर ही हम चोरी-ठग्गी और बेईमानी करते हैं।

इस पेट दा मारया फेर भोंदा, बंदा राम दा नाम भुलावंदा ऐ।

जो लोग पक्षियो को पकड़ते हैं वे जाल के अंदर कुछ खाने वाली चीज रख देते हैं। जब पक्षी उस चीज को खाने के लिए आता है तो वह जाल में फँस जाता है अगर पेट न हो तो क्या पक्षी उस चोगे पर आकर बैठे?

सब सन्तों का जातिय तजुर्बा है कि साधु विषय-विकार, माया व हर अपराध का त्याग कर देते हैं अगर वे त्याग न करें तो परमात्मा दरवाजा नहीं खोलता लेकिन वे भी अन्न नहीं छोड़ते और न ही वे अन्न छोड़ने का उपदेश देते हैं क्योंकि हमारे प्राण अन्न के अंदर हैं। पैदाईश से लेकर मौत तक हम पेट के अंदर डालते ही रहते हैं फिर भी इसे सब्र नहीं आता।

कबीर साहब के मिसाल देने का भाव इतना ही है कि वाहेगुरु-वाहेगुरु कहने से वाहेगुरु नहीं मिलता। अकाल पुरख-अकाल पुरख कहने से अकाल पुरख नहीं मिलता या गॉड-गॉड कहने से गॉड

नहीं मिलता। हम जिनका नाम ले रहे हैं अंदर जाकर हमने उनसे मिलना है कि वह कौन सी ताकत है?

नर के पास सुवा आइ बोलै, गुरु परताप न जाना।
जो कबही उड़ि जात जंगल में, बहुरि सुरत नहिं आना।।

अब आप प्यार से कहते हैं कि जिस तरह तोता नर की संगत में आकर राम-राम करता है लेकिन जब वह जंगल में चला जाता है मेवे खाने लग जाता है उस समय राम लफ्ज को भूल जाता है।

इसी तरह हम पढ़ते हुए खूब आनन्द लेते हैं लोगों को भी शान्ति का उपदेश करते हैं। लोग हमें महात्मा तक कहना शुरू कर देते हैं लेकिन जब इस मन को शराब-कबाब, विषय-विकार, धन-दौलत के मेवे मिलने लगते हैं उस समय हम यह भूल जाते हैं कि हम महात्मा की बानी पढ़कर आए हैं।

बिन देखे बिन दरस परस बिन, नाम लिये का होई।

कबीर साहब एक बहुत अच्छी मिसाल देकर समझाते हैं कि आपने जिसे देखा नहीं जिसके साथ आपका मिलाप नहीं हुआ अगर आप सारा दिन उसका नाम लेकर उसे पुकारते रहें तो उसे क्या इल्म है कि मुझे भी कोई याद करता है?

मैं बताया करता हूँ अगर कोई मजिस्ट्रेट खुद तो दफ्तर में जाकर न बैठे, वहाँ अपनी तस्वीर रख जाए या अच्छी किताब लिखकर रख जाए तो क्या वह तस्वीर या वह किताब किसी का फैसला कर देगी? बेशक वह तस्वीर या किताब कितनी भी अच्छी है अगर हम उस मजिस्ट्रेट से मिलें तो हम अपने मुकद्दमें का फैसला करवा सकते हैं और उसकी किताब से भी फायदा उठा सकते हैं। इसी तरह अगर कोई महाजन खुद तो दुकान पर न बैठे और वहाँ

अपनी तस्वीर रख जाए तो क्या तस्वीर सौदा बेच देगी, क्या तस्वीर ग्राहक से पैसे लेकर रख लेगी?

कबीर साहब का भाव इतना ही है कि प्यारेयो! आपने जिस परमात्मा को देखा नहीं जिसके साथ आपका मिलाप नहीं हुआ। आपको यह भी पता नहीं कि वह किस तरह मिलता है? हमने शरीर के अंदर कान, नाक या पैरों के रास्ते जाना है। हम उसे अल्लाह, वाहे-गुरु, राम, रहीम कहकर पुकारें तो उसे क्या पता है? सबसे पहले उससे मिलने का रास्ता लेना है उससे जाकर मिलना है फिर उसको अपना सुख-दुख बताना है।

सच्चे पातशाह महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जो काम एक व्यक्ति कर सकता है वही काम दूसरा व्यक्ति भी कर सकता है।'' सन्त यह नहीं कहते कि सिर्फ हम ही अंदर जाकर मिल सकते हैं, आप नहीं। उन्होंने हमें पूरा नाम, पूरा साधन और तरीका बताया है। वे यह भी कहते हैं कि आप मेहनत करके अंदर जाएं, पवित्र जिंदगी बनाएं तो आप भी परमात्मा से मिल सकते हैं।

धन के कहे धनी जो होई, निरधन रहै न कोई।।

कबीर साहब कहते हैं अगर पौंड-पौंड कहने से कोई साहूकार बन जाए तो लंबे-चौड़े कारोबार चलाने की और मेहनत करने की क्या जरूरत है? सुबह उठकर धूप दी, पौंड-पौंड कहा और धनी हो जाएं। गुरु नानक साहब कहते हैं:

गल्ली किन्हें न पाया।

हम बातों से इस मसले को हल नहीं कर सकते। बेशक! सन्त-सतगुरु संसार में बने बनाए बर्तन आते हैं फिर भी वे संसार में इस तरह की लग्न लेकर आते हैं कि बचपन से ही उनके अंदर

वस्तु को प्राप्त करने के लिए गहरी सोच होती है। वे नाम लेकर दिन-रात मेहनत करते हैं, वे हमें डेमोस्ट्रेशन देने के लिए ही इतनी मेहनत करते हैं कि हम लोग आलसी न हो जाएं।

हँस हँस पिया न पाया जिन पाया तिन रोए।
हाँसी खेड़े पिया मिले तो कौन दुहागन होए।।

सन्त कहते हैं कि आप जब तक अपने हाथों से मेहनत करके रोजी-रोटी नहीं कमाएंगे तब तक परमात्मा दरवाजा नहीं खोलेगा। गुरु नानकदेव जी तो यहाँ तक कहते हैं:

घाल खाए कुछ हत्थों दे, नानक राह पछाणे से।

महात्मा खुद दस नाखूनों से मेहनत करके रोटी कमाते हैं और संगत के लिए जो लंगर चलाया होता है वे उस लंगर में भी अपनी मेहनत की कमाई डालते हैं।

साँची हेत बिषै माया से, सतगुरु सब्द की हाँसी।
कहै कबीर गुरु के बेमुख, बाँधे जमपुर जाहीं।।

कबीर साहब आखिर में इस शब्द के अंदर एक ही नसीहत करते हैं कि पंडित, भाई, मौलवी, पादरी ये सब एक ही श्रेणी में आ जाते हैं। ये सब कमाई वाले सन्तों का मजाक उड़ाते हैं कि हमसे कौन सा परमात्मा ने पूछना है, चाहे किसी भी तरह लोगों से भेंट पूजा लेकर खाएं? इसकी निन्दा कर, उसकी निन्दा कर क्योंकि समाजिक लोगों के पास निन्दा का ही बड़ा तोपखाना होता है। आगे यह कानून है कि जिनका खाया होता है यम उनका हिसाब माँगते हैं। गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं:

जोगी होय जग भवे, घर घर भिखया ले।
दरगाह लेखा मंगिए, किस किस उत्तर दे।।

बानी में जिक्र आता है कि योगी लोगों से माँग रहे थे। गुरु अमरदेव जी महाराज उनसे कहते हैं , ''देखो प्यारेयो! आप जिनका खाते हैं उनका हिसाब-किताब किस तरह चुकाएंगे?''

जब गोपीचंद और राजा भृतहरि राज्य को छोड़कर फकीर हुए तो दुनिया मक्खियों की तरह उनके पीछे लग गई कि शायद ये कुछ होंगे! जो ये राज्य को छोड़कर फकीर बन गए हैं। गोपीचंद और भर्तृहरि बहुत परेशान हुए कि इन मक्खियों की वजह से तो हमने अपना घर और अपने राज्य का त्याग किया लेकिन इस जनता ने फिर भी हमारा पीछा नहीं छोड़ा।

आखिर बहुत सोचकर गोपीचंद और भर्तृहरि ने एक कुम्हार के घर जाकर डेरा लगा लिया। कायदा यह है कि गरीब के मेहमान की कोई खास पूछ नहीं होती कोई उनकी तरफ तवज्जो नहीं देता। महाराज जी कहा करते थे, ''बेशक इत्र वाला इत्र न भी बेचे फिर भी कभी न कभी उसकी डब्बी का ढ़क्कन खुला रह जाता है किसी न किसी को खुशबू आ जाती है।''

इसी तरह पहले पड़ोस में पता लगा कि कुम्हारों के घर में बहुत अच्छे महात्मा आए हुए हैं। वे परमात्मा की अच्छी-अच्छी बातें करते हैं, धीरे-धीरे यह खबर राजा तक भी पहुँच गई। जिधर राजा जाए प्रजा अपने आप ही उस तरफ चली जाती है। राजा के साथ प्रजा भी दर्शनों के लिए तैयार हो गई। बाजे-गाजे ले लिए छिड़काव वगैरहा होने लगा गोपीचंद और भर्तृहरि ने पूछा कि यह आवाज किस चीज की है? उन्हें बताया गया कि राजा आपके दर्शनों के लिए आ रहा है और राजा के साथ प्रजा भी है।

वे बहुत परेशान हुए कि इन लोगों से पीछा छुड़वाने की खातिर तो हम साधु हुए थे लेकिन इन्होंने फिर भी पीछा नहीं

छोड़ा। उन्होंने ऐसा कौतुक बनाया कि हम इस तरह करेंगे। जब बाहर गए इंतजार होने लगा कि महात्मा आ रहे हैं। गोपीचंद से भर्तृहरि ने कहा, ''आज मैं भिक्षा लेने जाऊँगा।'' भर्तृहरि ने कहा, ''कल तू भिक्षा लेने गया था, तू सारा हल्वा पूड़ा खा गया था।'' गोपीचंद ने कहा, ''परसो जितने भी खीर-मालपुए आए थे वह तू अकेले ही खा गया था।'' दोनों झगड़ने लगे दोनों ने एक-दूसरे को डंडा मारा। राजा प्रजा सब हाथ पर हाथ मारकर चले गए कि ये अच्छे महात्मा हैं जो रोटी के लिए आपस में लड़ते हैं। महात्मा सुखी हो गए, अच्छा है कि मक्खियां टल गई।

इस कहानी का मकसद यह है कि दुनियादार सन्तों का मजाक उड़ाते हैं। सन्त हँस देते हैं। उनके सतसंग में प्रेमी आत्माएं आती हैं भीड़-भड़क्का समाप्त हो जाता है, मक्खियां टल जाती हैं।

इसी तरह जब गोपीचंद गोरखनाथ के पास जाकर उनका चेला बना तो गोरखनाथ ने सोचा कि यह राजा होकर योगी बना है इसमें से मान-बड़ाई तो निकालूं! गोरखनाथ ने कहा, ''बेटा! तू अपने शहर से माँगकर ला।'' जब पब्लिक ने देखा कि राजा माँगने के लिए आया है तो जिसने एक रूपया देना था उसने दस रूपये दिए। जब वह माँगता-माँगता रानियों के पास गया तो रानियों ने सोचा कि पति के साथ ही हार-श्रृंगार था, अब हमने इनका क्या करना हैं? रानियों ने सारा हार-श्रृंगार उतारकर राजा के हवाले कर दिया। राजा वह सब सामान योगियों के पास पहुँचाता गया, योगियों का हल्वा मांडा चलने लगा।

जब गोपीचंद अपनी माता के पास गया तो माता ने कहा, ''अब तू योगी है मैं गृहस्थी हूँ। मेरा हक तो नहीं कि तुझे कोई उपदेश करूं लेकिन मैं भिक्षा तो जो चाहे दे सकती हूँ।'' गोपीचंद

चुप होकर सुनता रहा। माता ने कहा, ''गोपीचंद! तू मजबूत से मजबूत किले में रहना, अच्छे से अच्छा खाना खाना और नरम से नरम बिस्तरे पर सोना।'' गोपीचंद ने कहा, ''माता! मैं आपके कहने से तो साधु बना हूँ लेकिन अब आप कहती हैं कि मजबूत से मजबूत किले में रहना। मैंने जंगलो में रहना है मेरे लिए किले कहाँ है? आप कहती हैं कि अच्छे से अच्छे खाने खाना। मैंने माँगकर खाना है, मैं अच्छे से अच्छा खाना किस तरह खा सकता हूँ? आप कहती हैं कि नरम से नरम बिस्तर पर सोना, मैंने जंगलो में रहना है मुझे नरम बिस्तर कहाँ से मिलेंगे?''

माता ने कहा, ''योगी! तू मेरा भाव नहीं समझा। मजबूत से मजबूत किला गुरु की शरण है, सदा ही गुरु की शरण में रहकर शब्द-नाम की कमाई करना; गुरु की शरण एक मजबूत किला है। जब तक तुझे भूख बहुत ज्यादा परेशान न करे तू खाना न खाना। जब पेट भरा होता है हम तभी नखरे करते हैं कि खाना ठीक नहीं। भूख लगने पर दस दिन का बासा खाना भी लजीज से लजीज लगता है। इसी तरह जब तक नींद तुझे गिरा न ले तू भजन-अभ्यास में जुड़े रहना जब नींद तुझे गिरा ले फिर चाहे बिस्तर है या तू पत्थरों पर सोया है कोई फर्क नहीं पड़ता तब तुझे वह नींद आएगी जो राजा-महाराजाओं को भी नहीं आती।''

कबीर साहब ने हमें बड़े प्यार से नाम की तरफ, सतगुरु की तरफ और सतसंग की तरफ प्रेरित किया है। सतगुरु की शरण और नाम की कमाई मजबूत है। हम लफ्जों से परमात्मा से नहीं मिल सकते। लफ्ज जो कह रहे हैं उन पर अमल करने से ही परमात्मा मिलता है।

6 जनवरी 1995

***

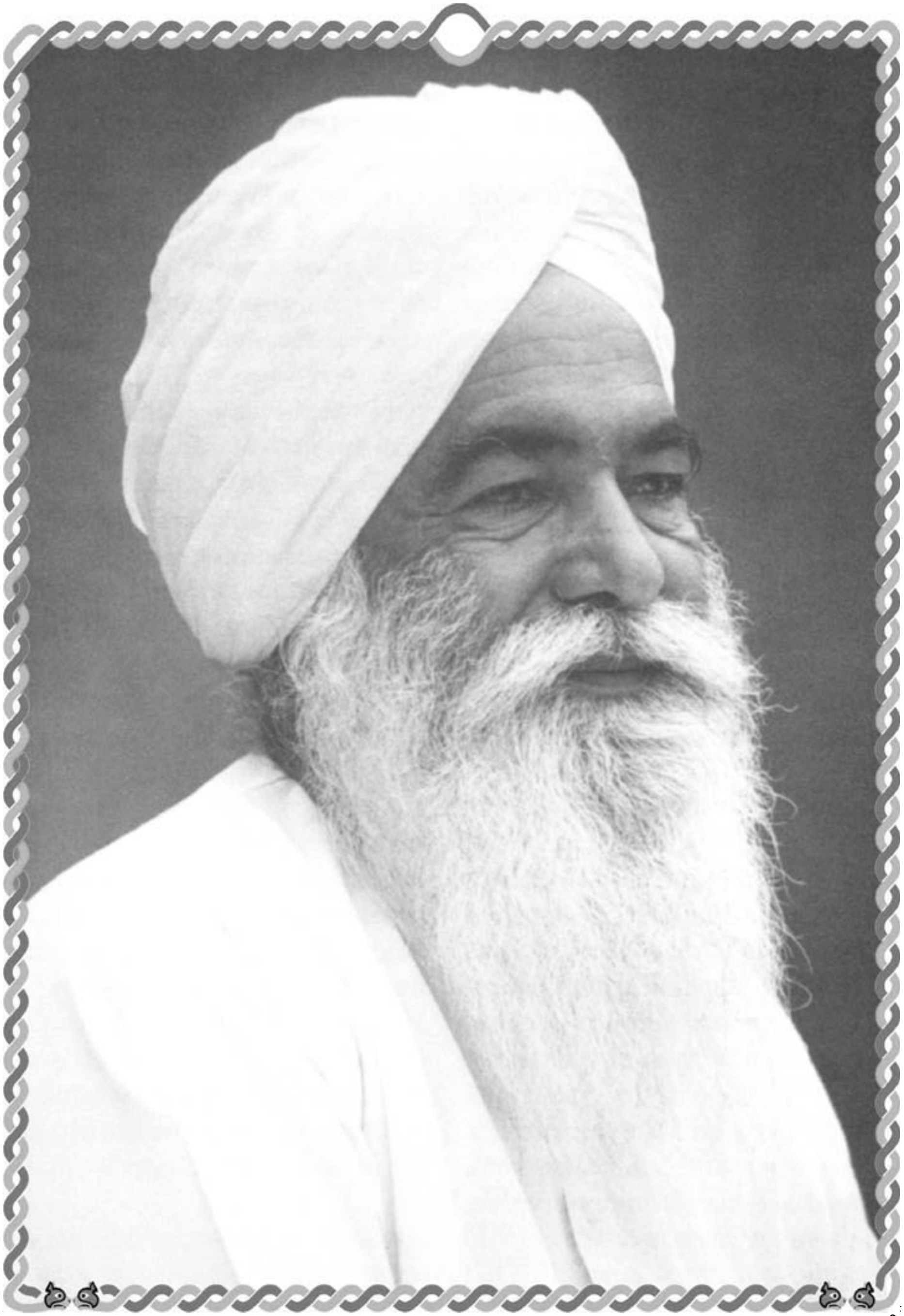

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

चार्जिंग

एक प्रेमीः- *सन्तबानी मैगजीन अप्रैल -1985 में छपा है जिसमें आपने कहा है कि जिसे नाम मिला हुआ है उसके सिमरन के पीछे पूरे गुरु की* ***चार्जिंग*** *काम करती है। क्या आप हमें यह बताएंगे कि यह चार्जिंग किस तरह और कब होती है? यह चार्जिंग किस तरह कायम रखी जाती है, क्या यह* ***चार्जिंग*** *एक बार में हो जाती है या सिमरन को कारगर रखने के लिए दोबारा चार्ज किया जाता है?*

ऐतिहासिक तौर पर कबीर साहब से पहले वह कौन सा महात्मा था जिसने सिमरन को अपनाया और लोगों को दिया। उस महात्मा को किससे सिमरन प्राप्त हुआ? अभी सिमरन का जो मौजूदा बाहरी रूप है क्या इससे पहले इसका कोई और रूप था जो बदलकर इस रूप में आ गया अगर ऐसा है तो आगे जाकर इसमें और क्या तब्दीली होने की संभावना है?

बाबा जीः- हाँ भई! सवाल तो सबने सुन ही लिया है अब गौर से जवाब सुनें, यह जवाब हर एक के लिए फायदेमंद है इसे समझने की कोशिश करें। महाराज सावन सिंह जी ने बहुत खोलकर बताया कि संसार में पहले सन्त कबीर साहब थे जो चारो युगों में आए। अनुराग सागर* में इस बारे में बहुत खोलकर बताया गया है।

सतयुग में कबीर साहब का नाम सतसुकृत था। त्रेता में करूणामय था। द्वापर में मनिन्द्र और कलयुग में आपका नाम कबीर पड़ा। पहले तीनों युगों में सेवक जब तक सिमरन नहीं पका लेता था तब तक उसे 'शब्द-नाम' का रास्ता नहीं बताया जाता था।

कलयुग में कबीर साहब ने जीवों पर खास दया करके सिमरन और धुन इकट्ठे ही देने शुरू कर दिए। मंडल कभी नहीं बदलते, सिमरन कभी नहीं बदलता, सच्चखंड भी वही है। आपको बताया गया है कि जो पाँच मंडल रास्ते में आते हैं उनमें जो सामान है वह भी वही है ये तब्दील नहीं होते, बदलते नहीं।

जब प्रलय आती है तो ये सारे मंडल ढह जाते हैं समाप्त हो जाते हैं रचना फिर दोबारा से होती है। सच्चखंड ही ऐसा देश है जहाँ न प्रलय होती है न महाप्रलय होती है। सच्चखंड पहुँची हुई आत्माएं इस संसार में दोबारा नहीं आती। सिर्फ सन्त परमात्मा के हुक्म से जीवों को लेने के लिए आते हैं, उसमें उनकी अपनी कोई मर्जी नहीं होती वे हमारी तरह कैदी बनकर नहीं आते।

सन्त पहले सेवकों को सिमरन देते थे धुन नहीं देते थे तो कई बार ऐसा होता था कि सिमरन पकाने से पहले गुरु चोला छोड़ जाता था या सेवक चोला छोड़ जाता था, जिससे सेवक का काम अधूरा रह जाता था। सिमरन धुनात्मक नाम से जुड़ने का एक जरिया है। अब सन्तों ने हमारे ऊपर भारी दया की है वे हमें सिमरन और धुन इकट्ठी ही दे देते हैं ताकि जीव बीच में अटकता न रहे।

मैंने आपको बताया था कि सिमरन फैले हुए ख्यालों को इकट्ठा करके नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आना है। तारा मंडल, सूरज मंडल, चंद्रमा मंडल से ऊपर गुरु स्वरूप तक जाना है। सिमरन हमें इससे आगे लेकर नहीं जाता। जब हमारी आत्मा ऊपर पहुँचती है तो 'शब्द' हमारी आत्मा को ऊपर खींच लेता है। गुरु साथ होकर हर मंडल को पार करवाता है। शब्द के जरिए ही आत्मा एक से दूसरे मंडल को पार करती है।

अब आप चार्जिंग की तरफ आएं। बड़ा दिलचस्प सवाल है कि चार्जिंग कब की जाती है अगर वह **चार्जिंग** खत्म हो जाए तो क्या दोबारा चार्जिंग की जाती है? गुरु किस समय दया करता है आप इसकी तरफ गौर करें।

प्यारेयो! पहली बात तो यह है कि ये महान आत्माएं बनी बनाई ही परमात्मा के पास से आती है। गुरु गोबिंद सिंह जी अपनी हिस्ट्री में लिखते हैं कि मैंने अपने पिछले जन्म में बहुत भारी तप किया, मैं दो से एक रूप हो गया परमात्मा में मिल गया। जब संसार में दुनिया पत्थर पूजक हो गई थी कोई परमात्मा की भक्ति नहीं कर रहा था, जितने भी आए सबने अपना ही नाम जपवाया किसी ने परमात्मा का नाम नहीं जपवाया।

तब परमात्मा ने मुझसे कहा, ''मैं तुझे अपना प्यारा बेटा बनाकर संसार में भेज रहा हूँ।'' मेरा इस संसार में आने के लिए दिल तो नहीं करता था लेकिन मैं परमात्मा का हुक्म नहीं मोड़ सका। मैंने परमात्मा से विनती की कि हे परमात्मा! मैं तुझे छोड़कर किसी देवी-देवता से कोई ताकत हासिल न करूं। मैं जो वर चाहूँ तुझसे ही प्राप्त करुं। मेरा परिवार सिक्ख-संगत सुखी बसे नाम के साथ जुड़े रहें, मेरी तेरे आगे यही विनती है यही माँग है।

ठाड़ पयो मैं जोड़कर वचन कहा सिर नाए।
पंथ चला तब जगत में जब तुम होय सहाय।।

मैंने परमात्मा के आगे हाथ जोड़कर नमस्कार किया और यह कहा, ''तेरे नाम का संप्रदाय तब ही चलेगा जब तू मदद करेगा।'' सोचकर देख लें! मालिक के प्यारों का परमात्मा के साथ क्या रिश्ता होता है? वे परमात्मा में समाए होते हैं। पिता अपनी ड्यूटी समझता है। पिता को पता होता है कि मेरे बेटे को किस चीज की

जरूरत है वह किस चीज का शौकीन है उसकी क्या मांग है? वह बिना माँगे ही देता रहता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

पिता कृपाल आज्ञा ऐह कीन्ही, बारक मुख माँगे सो देना।

परमात्मा दयालु है, कृपा करता है। परमात्मा ने आज्ञा दे दी कि तुझे जिस चीज की जरूरत है वह तुझे मिलेगी।

आज सवारियों के साधन बदल गए हैं हर जगह जीपें, कारे और बसे हैं। मैं उस जमानें की बात कर रहा हूँ जब ये साधन नहीं थे। उस समय हिन्दुस्तान में घोड़े की सवारी ज्यादा से ज्यादा मशहूर थी। पंजाब में मुक्तसर एक तीर्थ है। वहाँ हर साल मेला लगता है, घोड़ों की दौड़ होती है। घोड़े वालों को बहुत ईनाम मिलता है। मैं और मेरे पिता उस तीर्थ पर गए। जो घोड़ा सबसे अव्वल आया मेरे पिता ने उस घोड़े वाले से कहा, ''इस घोड़े की क्या कीमत लेनी है?'' घोड़े वाले ने कहा, ''सरदार जी! क्या आप इस घोड़े का मूल्य चुका देंगे?'' मेरे पिता ने कहा मैंने इसलिए ही तुझसे पूछा है? घोड़े वाले ने जो कीमत बताई मेरे पिता ने उसे वह कीमत दे दी। अब आप अंदाजा लगा सकते हैं कि मेरे पिता ने यह ड्यूटी समझी कि मेरा बेटा इस घोड़े पर बैठा हुआ अच्छा लगेगा। कई बार जब वह खुश होता तो मुझे घोड़े पर बिठाकर कहता, ''इसे चला भई।''

मेरा कहने का भाव सन्तों का परमात्मा के साथ बाप और बेटे का रिश्ता होता है। यह रिश्ता बड़ा प्यारा, अटूट होता है। सन्तों को जब भी कोई जरूरत होती है तब परमात्मा उन्हें बिना माँगे ही दे देता है और उनके सेवकों की बिना कहे ही मदद करता रहता है।

महाराज कृपाल को बचपन से ही बहुत अंतर्यामता थी। जब आप चौथी क्लास में पढ़ते थे तब आपने अपने टीचर से कहा,

''मेरी नानी चोला छोड़ रही है मुझे छुट्टी दे दें।'' टीचर बहुत खफा होकर बोला, ''तू बड़ा औलिया कहाँ से आया है? बैठ जा।'' दो मिनट बाद आपके घर से संदेश आया कि पाल को छुट्टी दे दें इसकी नानी इसे याद कर रही है। उसके बाद महाराज जी जितने समय वहाँ पढ़ते रहे वह टीचर आपका आदर करता रहा।

इसी तरह जिनके साथ मेरा बचपन बीता है वे आपको बहुत सारी बातें बता देंगे। पिछले सतसंग में मेरी बहन जिसके साथ मैंने बचपन बिताया है वह 'नाम' लेने के लिए आई। मुझे उसका एक लफ्ज याद है। जब मैं छोटा था तो वह मुझसे कहती, ''वे वीरा! तेरा ही आसरा है।'' मैं हँस पड़ा, ''क्या मैं भगवान हूँ जो मेरा आसरा है?'' उसने कहा, ''हाँ! तेरा ही आसरा है।''

जब वह पिछली बार आई तो मैं उससे पच्चीस साल बाद मिला, मैंने उसे बिल्कुल नहीं पहचाना क्योंकि अब वह काफी आयु

की है, उसके पोते हैं। उसने कहा, ''तू मुझे पहचानता है?'' मैंने कहा, ''बिल्कुल नहीं।'' उसने कहा, ''मैं नाम लेने के लिए आई हूँ एक बार मैं चोरी से सतसंग सुन गई थी।'' मैं वह बात याद करके हँस पड़ा कि तू कहती थी कि तेरा ही आसरा है।

इसलिए यह सबसे बड़ी चीज है जिसके साथ आपने बचपन गुजारा होता है, बचपन में बहुत गलतियां भी हो जाती हैं। ये आत्माएं बचपन से ही सचेत होती हैं, पवित्र होती है। इन आत्माओं का परमात्मा के साथ बचपन से ही लिंक होता है लेकिन ऐसी आत्माएं वक्त आने से पहले प्रकट नहीं होती। पहली बात तो यह है कि ये बर्तन बने बनाए आते हैं दूसरी बात यह है कि ये यहाँ आकर **चार्जिंग** प्राप्त करने के लिए ज्यादा से ज्यादा मेहनत करते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि सन्तों के अंदर कोई ताकत काम करती है फिर आप यह भी कहते कि मैं उसे ताकत भी नहीं कह सकता क्योंकि ताकत तो नापी-तोली होती है; वह जो कुछ है सो है। सन्तों के अंदर **चार्जिंग** बैटरी जैसी नहीं होती कि जो खत्म हो जाए उसे फिर चार्ज कर लिया जाए। सन्तों का परमात्मा के साथ सीधा लिंक जुड़ा होता है।

अब सवाल का हिस्सा यह है कि सन्त कब दया करते हैं, किस तरह दया करते हैं? यह बड़ी सोचने-समझने वाली बात है। हर सतसंगी को इस तरफ ध्यान देना चाहिए। परमपिता कृपाल ने पच्चीस साल आम सतसंगों में कहा, ''देने वाले का क्या कसूर है? सवाल लेने वाले का है।'' वे सच्चखंड से देने के लिए ही आए हैं। अब हमारा फर्ज है कि हम कब उस वस्तु को प्राप्त करते हैं?

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''जिस भंडारी के खजाने में कुछ है ही नहीं, उससे लोग क्या फायदा उठा सकते हैं?

अगर परमात्मा ने उसे खजाने का भंडारी बना दिया और वह कंजूस बन जाए तब भी लोग उससे फायदा नहीं उठा सकते।'' हमें भंडारी भी ऐसा मिले जिसके भंडार में किसी चीज की कमी न हो उसका दिल बहुत बड़ा हो कि वह आपको देकर ही खुश हो।

आपको भजन- सिमरन का जो रास्ता बताया गया है यह दया को प्राप्त करने का जबरदस्त साधन है, सेवक इसके जरिए जब चाहे दया को प्राप्त कर सकता है। हमारा भरोसा क्यों टूटता है, हम गुरु की दया को क्यों नहीं प्राप्त कर रहे? इसका बहुत जबरदस्त कारण यह है कि हम अपनी आत्मा के लिए कुछ नहीं माँग रहे होते अगर माँगते हैं तो कहते है कि मेरी बीमारी दूर हो जाए, बेरोजगारी दूर हो जाए। कोई कहता है कि मुझ पर मुकद्दमा चला सन्तों ने मेरी मदद नहीं की। कोई कहता है मेरे बेटा नहीं था, बेटा हो गया लेकिन बेटे ने सारी रात बैचेन रखा। हमने फरियाद की थी लेकिन सन्तों ने बच्चे को चुप नहीं कराया।

आप सोचकर देखें! जिसकी दुकान पर हीरे हैं अगर आप उससे कोयले मांगे तो वह आपको कोयले कहाँ से देगा? बेशक आप उसे कितना भी भला-बुरा कहें चाहे उसके आगे विनतीयां करें जब उसकी दुकान पर कोयले हैं ही नहीं अगर आप उससे हीरे माँगें तो वह आपको हीरे दे देगा।

हमारा और गुरु का परमार्थ का रिश्ता है। हमारी आत्मा को सच्चखंड पहुँचाना गुरु का परम धर्म होता है। गुरु अपनी ड्यूटी निभाता है आप परमार्थ के लिए कुछ भी माँगे वह जरूर देगा, यह उसका बिरद है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन तुध होर जे मंगणा सिर दुखां दे दुख।
दे नाम संतोखिया उतरे मन की भुख।।

हम जीवों को मांगना भी नहीं आता कि हमने सन्तों से क्या मांगना है? हम जो चीजें माँगते हैं जब उन चीजों से दुख मिलता है तो फरियाद करते हैं कि ये चीजें हमें क्यों मिली?

मेरी चाची के लड़के की शादी नहीं हो रही थी उसने काफी मन्नतें मांगी। चाची ने मुझसे कहा कि जब तेरे गुरु बाबा बिशनदास आएं तो मुझे बताना। अगर बाबा बिशनदास जी मेरी इच्छा पूरी कर दें तो मैं हर महीने उनके दर्शन करने आया करूंगी। जब बाबा बिशनदास जी आए तो मैंने उसे बताया। बाबा बिशनदास जी ने हँसकर कहा, ''तेरे लड़के की शादी तो हो जाएगी लेकिन तू वायदा कर कि दर्शनों के लिए आया करेगी।'' चाची ने कहा, जरूर। बाबा जी ने कहा, ''कहीं ऐसा न हो कि तू मेरे पीछे डंडा लेकर फिरे?''

चाची के लड़के की शादी हो गई घर में बहू आ गई। मेरी चाची का स्वभाव बहुत सख्त था लेकिन वह नुख्स अपनी बहू में निकालती थी। मैंने चाची से कहा कि मैं बाबा बिशनदास जी के दर्शनों के लिए जा रहा हूँ तू मेरे साथ उनके दर्शन करने चल। चाची ने कहा, ''मैं उनके दर्शन तब करुंगी जब ये दोनों ही मर जाएं।'' वह हमेशा ही बाबा जी के आगे खड़ी होकर कहने लगी कि मैं आपकी करामात तब मानूंगी अगर ये दोनों मर जाएं। सोचकर देख लें! पहले हम चीजें मांगते हैं जब तकलीफ होती है तो हम उस ईष्ट में नुख्स निकालते हैं कि तूने हमारा यह काम नहीं किया।

पश्चिम से एक मेम साहब आई वह बहुत अच्छी थी, भजन-अभ्यास करती थी। वह जब इंटरव्यू में आई तो उसने कहा, ''मेरा दिल करता है कि मैं काफी सारे बच्चे पैदा करूं।'' मैंने कहा, ''यह महाराज कृपाल का दरबार है हुजूर सबकी आशा पूरी करते हैं।'' कुछ समय बाद उसके दो बच्चे हुए।

आपको पता है कि दो बच्चे पालने बहुत मुश्किल होते हैं। मैं उसकी मुश्किल को भी जानता था। जब मैं टूर पर गया वह मुझसे मिली, दोनों बच्चे उसके पास थे। उसने एक बच्चा किसी और से उठवाया हुआ था। उसने मुझसे कहा, ''मैं बहुत दुखी हूँ कहीं फिर ऐसा न हो जाए!'' मेरे कहने का भाव यह है कि पहले जीव मांगता है जब वह चीज उसे मिल जाती है उसे उस चीज से दुख होता है तो फिर फरियादें करता है।

प्यारेयो! सतगुरु अपने बच्चों को दोनों हाथों से दात देकर खुश है लेकिन हमें माँगना नहीं आता हम दुनियावी चीजें माँगते हैं। सन्त-सतगुरु जानते हैं कि यह मेरे बच्चे के फायदे में है या नहीं? जब हम माँग कर रहे होते हैं वह जवाब दे रहा होता है लेकिन अफसोस! हम अब तक उसे सुनने के काबिल नहीं बने।

प्यारेयो! सेवक के साथ बड़े-बड़े हादसे बीतते हैं अगर गुरु के पास एक सैकिंड से पहले पहुँचने की **चार्जिंग** न हो तो वह सेवक की मदद किस तरह कर सकता है? हमारे पास ऐसे बहुत से पत्र आ जाते हैं जिनके बड़े-बड़े एक्सीडेंट हो जाते हैं उन्हें कई-कई दिन होश नहीं आती लेकिन फिर भी वे बताते हैं कि गुरु ने किस तरह हमारी मदद की। कई प्रेमियों का ऑपरेशन होता है वे बताते हैं कि किस तरह गुरु हमारे पास खड़ा रहा। कई बीबीयों के बच्चे ऑपरेशन से होते हैं वे गवाही देती हैं कि उतनी देर बाबा सावन सिंह जी, कृपाल सिंह जी और आप खड़े थे। जब बच्चा पैदा हुआ तो आपने बिल्कुल भी तकलीफ नहीं होने दी।

आप देखें! वह कौन सी चीज है जो उन्हें वहाँ खड़ी हुई दिखाई देती है। यह उनकी श्रद्धा, प्यार और विश्वास है। गुरु हमेशा ही सेवक के साथ है।

बड़ी हँसने वाली दिलचस्प बात है। सेवक को करंट की जरूरत है अगर गुरु यह कहे कि मैं अपनी बैटरी चार्ज करता हूँ तो ऐसे गुरु से सेवक क्या फायदा उठाएगा? हमने ऐसे गुरु के पास जाना है जिसकी बैटरी हमेशा फुल है जिसके अंदर परमात्मा प्रकट है। परमात्मा और उसमें कोई फर्क नहीं। अंधे गुरु के पास जाने से हमारा कोई फायदा नहीं होता लेकिन जब तक पूरा शिष्य, गुरु को न मिले तब तक अंधे सुजाखे का भी पता नहीं लगता।

मैं बचपन से इस तरफ लगा हुआ हूँ। मैंने अठारह साल 'दो-शब्द' का अभ्यास किया। परमात्मा कृपाल ने जब दिल-दिमाग खाली देखा तो वह खुद दया करके आया। उसने इस गरीब के अंदर नाम का खजाना रख दिया। परमात्मा कृपाल की दया से तकरीबन चार-पाँच साल फिर अभ्यास किया। गुरु हमेशा सच्चे शिष्य की खोज में होता है। जिस तरह शिष्य को गुरु भाग्य से मिलता है उसी तरह गुरु को भी पूरा शिष्य भाग्य से ही मिलता है। मैंने एक भजन में बताया है:

लोकी कैहंदे प्रेम सुखाला, ऐहदा झपट है शेरां वाला।
ऐह तां नाग जहरीला काला, थर थर रूह घबरांदी ऐ।।

शेर एक ही झपट में अपना शिकार कर लेता है। जिस तरह जहरीला नाग बंदे के पास मुँह करके कहता है कि मेरे ऊपर नहीं पीछे गिर। जब सच्चा शिष्य पूरे गुरु की सोहबत में आता है उसके ऊपर भी इसी तरह का असर होता है। गुरु उसे एक ही निगाह से अपना कर लेता है और शिष्य सदा के लिए उसका हो जाता है।

30 अक्टूबर 1985

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा अभ्यास में बिठाने से पहले

परमात्मा की भक्ति

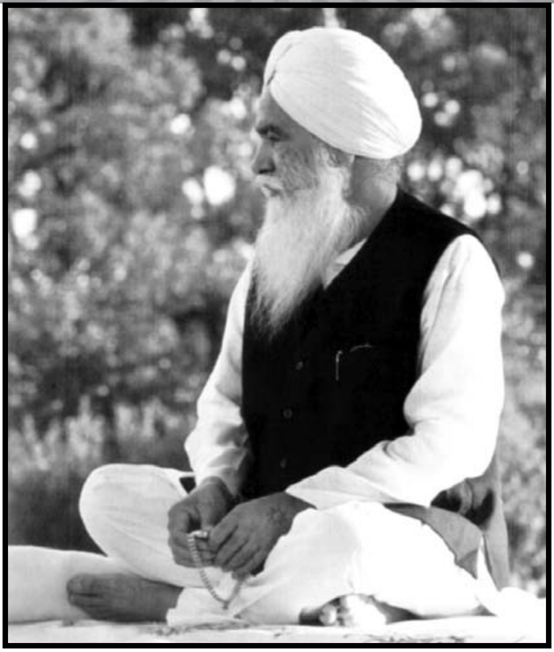

आपने रोज की तरह अपने ख्याल को बाहर से हटाकर अंदर ले जाना है, किसी भी आवाज की तरफ तवज्जो नहीं देनी। हर व्यक्ति अपने-अपने कार्यक्रम में मस्त है, हम भी अपने काम को सही ढ़ग से करें। यह उस दयालु परमात्मा कृपाल की खास दया है जिसने हमें अपनी याद का अपनी भक्ति का मौका दिया है। **परमात्मा की भक्ति** अमोलक धन, अमोलक दात है। इस संसार से कोई भी वस्तु हमारे साथ नहीं जाएगी।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हम जिस शरीर में बैठे हैं यह किराए का पराया मकान है हमने इसे यहीं छोड़ जाना है। इसमें बैठकर हम जो 'शब्द-नाम' का तोशा इकट्ठा कर लेंगे

वही हमारे साथ जाएगा वही फायेदेमंद है। दुनिया में अगर कोई अमोलक धन, अमोलक हीरा, इकट्ठा करने वाली वस्तु है तो वह **परमात्मा की भक्ति** है।''

सारी दुनिया को काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के पाँच डाकुओं ने परेशान किया हुआ है। इससे बचने के लिए सन्त-सतगुरु ने भक्ति का साधन अपनाया और हमें भी बताया कि भक्ति ही काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की नाशक है।

सारी दुनिया जिस सुख की तलाश में मारी-मारी फिरती है वह सुख बाहर से न किसी को मिला है न मिल ही सकता है। दुनिया के पदार्थों में क्षण भंगुर सुख हैं। सच्चा सुख और शान्ति **परमात्मा की भक्ति** में है। हम जब तक मालिक के प्यारों के पास जाकर नहीं बैठते तब तक हम इस सुख को प्राप्त नहीं कर सकते।

परमात्मा के भक्त परमात्मा से बढ़कर होते हैं, उन्होंने परमात्मा को अपने ऊपर मेहरबान कर लिया है, खुश कर लिया है और अपने बस में कर लिया है। उन्हें इख्तियार है कि वे जिसे चाहे ले जा सकते हैं। महाराज सावन सिंह बहुत खोलकर बताया करते थे, ''हमें सन्त-सतगुरु ने जो ड्यूटी दी है वह हम खुद करें। एक अमीर आदमी थोड़े से आदमियों को ही अमीर बना सकता है। सारी दुनिया ही उस पर बोझ बनकर बैठ जाए यह ठीक नहीं।''

बेशक सन्त-सतगुरु पत्थरों को मोम कर देते हैं। पत्थर दिलों पर नाम की बारिश करके उन्हें भी भक्ति की तरफ प्रेरित करते हैं, उनसे भक्ति करवा लेते हैं लेकिन सबको यह ख्याल लेकर नहीं बैठना चाहिए। सन्त-सतगुरु ने हमारे जिम्मे जो ड्यूटी लगाई है हमने उसे करना है। हम सन्त-सतगुरु की सोहबत में जाकर इस धन को प्राप्त कर सकते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

सन्त की गैल न छोड़िए मार्ग लागा जाए।
पेखत ही पुनीत होय भेटत जपिए नाम।।

जब तक इस शरीर के अंदर साँस चल रहा है तब तक हमारे अंदर साधु-संग की तड़प लगी रहनी चाहिए। अगर हम साधु के हुक्म की पालना करेंगे तो साधु यही कहेगा कि आप नाम जपें। उसने हमसे दुनियादारी का कोई काम नहीं करवाना होता। उसे ज्ञान होता है कि यही धन इनके साथ जाएगा।

जब महाराज सावन सिंह जी सिकंदरपुर में रहते थे। उस समय बलूचिस्तानी मस्ताना उनके पास गया। मस्ताना एक मस्त फकीर था, वह सावन सिंह जी के ऊपर ज्यादा से ज्यादा मस्त था। वहाँ उसने खुद तो खेती-बाड़ी का काम नहीं किया और प्रेमियों को भी खेती-बाड़ी के काम से हटाकर कहा, ''आप लोग सावन की याद में बैठें वह दयालु है, मालोमाल कर देगा वह रहमत करने के लिए आया है।''

महाराज सावन के बच्चों को ऐतराज हुआ उन्होंने महाराज सावन सिंह जी से कहा कि देखो जी! यह खुद भी खेती-बाड़ी का काम नहीं करता औरों को भी नहीं करने देता। महाराज सावन सिंह जी ने हँसकर कहा, ''मैं तो तुम्हें भी कहता हूँ कि तुम लोग भी भक्ति करो, मैं तुम लोगों से खेती करवाने के लिए नहीं आया मैं तो सबसे भजन करवाने के लिए ही आया हूँ।''

सन्तों का भाव भजन-सिमरन ही होता है। कबीर साहब कहते हैं कि सन्त हमारे कुछ कर्म अपनी दया करके काट देते हैं और कुछ कर्म उनके दर्शनों से ही कट जाते हैं। आग के नजदीक बैठते ही ठण्ड दूर होती है। गुरु नानकदेव जी ने भी कहा हैः

तिन जन्म सँवारया अपना जिन गुरु अक्खी देखी।

इसी तरह अगर हम साधु-सन्त की शक्ति को न समझें लेकिन परमात्मा ने उनके अंदर शक्ति रखी होती है कि वह अपना जन्म सँवार लेता है और दूसरों के जन्म सँवार देता है।

कबीर साहब कहते हैं कि हमें ज्यादा से ज्यादा हुक्म का पालन करना है, संगत में जाना है। खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है। हमारा मन दूसरों को अभ्यास में बैठा देखकर लानत भी मारता है। मन दो तरफा हथियार है। यह कहेगा कि तेरा साथी कितना अभ्यास करता है? तू नहीं करता। जब अकेला होता है तो मन कहता है हाँ! कल अभ्यास कर लेंगे रात बड़ी है।

सबने अंदर से ख्याल हटाकर मन को शान्त करके अभ्यास में बैठना है। मैं हमेशा ही कहा करता हूँ कि मन के साथ संघर्ष करना ही अभ्यास है। मन को जवाब देकर अभ्यास में बैठें। मन से कहें कि देख! तू दुनिया का कारोबार करता है हमने कभी दखल नहीं दिया अब तू हमारे काम में दखल न दे, आप मन को जवाब देकर अभ्यास में बैठें।

जैसे समुद्री जहाज के ऊपर कौवे रहते हैं वे कौवे चाहे जितनी लंबी उड़ान भर लें लेकिन समुद्र में उनके बैठने के लिए कोई जगह नहीं होती वे जब भी बैठेंगे जहाज पर आकर ही बैठेंगे। अगर आप भी अपने मन को खुला छोड़ दें इसके कार्यक्रम को न देखें इसकी बात न मानें यह कितनी लंबी उड़ान भरेगा? आखिर आपके पास आकर ही टिक जाएगा। जब यह टिक जाता है आप इसे सिमरन में लगाएं सिमरन का अमृत दें। जैसे सिमरन में लगाना मुश्किल है उसी तरह फिर इसे सिमरन से हटाना भी मुश्किल है। सबने मन को जवाब देकर बैठना है। हाँ भई बैठें।

16 March 1985

***

मुद्दत होई यार विछुड़याँ पा फेरा

मुद्दत होई यार विछुड़याँ पा फेरा,
रूल गऐ विच संसार विछुड़याँ पा फेरा,

1. होई कोंण खुनामी, जो तुं मुड़या इ ना, (2)
तरले ओसियां पाऐ, तुं ते सुणया इ ना,
आजा आजा आजा (2), मुड़या पा फेरा,
मुद्दत होई यार .....

2. लंघदे ने दिन साडे, तरले पोंदेयां दे, (2)
साह जे दाता चलदे, साडे जिओं देयां दे,
करे यतन बहुत मैं दाता (2), बझदा ना जेरा,
मुद्दत होई यार .....

3. मन वी दागी, तन वी दागी हो गया है, (2)
समझ नी ओंदी दाता, की की हो गया है,
बणके आजा वैद्य (2), जे धरजां मैं जेरा,
मुद्दत होई यार .....

4. हिम्मतां टुटियां हौंसले टुटे, तन वी मेरा थक गया, (2)
सुण सुण गल्लां ताने फिकरे, मन वी मेरा अक्क गया,
दिसदा ना कोई चारे पासे (2), पै गया जिवें है नेरा,
मुद्दत होई यार .....

5. रब सी मेरा रब है मेरा, सब कुछ तूं ही है मेरा, (2)
देख ना अवगुण अजायब जी, मैं तेरा बस मैं तेरा,
'गुरमेल' दे कोले आके (2), बैह जा इक वेरां,
मुद्दत होई यार .....

ऐस दिल नूं मैं किंझ समझांवां

ऐस दिल नूं मैं किंझ समझांवां जी,
उम्रां तां लंघ चलियां दाता जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

1. दुःख विछोड़े दा बहुत सतोंदा वे, (2)
सोहणया दर्श बिना चैन नहीं ओंदा वे, (2)
बह जा सामणें तूं इक वारी आके जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

2. दर्द विछोड़ा अज किने साल होए वे, (2)
जांणदा ऐं तेरे बाजों किना अस्सीं रोए वे, (2)
हुण हिम्मतां ने तेरे बाजों हारियां जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

3. तेरे ही विछोड़े वाली अग्ग मैं तां सेकदी, (2)
बैठ तेरे दर उत्ते तेरा ही राह देखदी, (2)
कीते वादेयां नूं आप निभा जा जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

4. मसां मसां जिंदड़ी तैं प्यार विच रंगी वे, (2)
जापदा है जन्मा तों तेरे नाल मंगी वे, (2)
बण सजण तूं डोली मेरी चा जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

5. समझ यतीम दाता तूं ही गल लाया सी, (2)
प्यार वाला बीज दाता आप तूं लगाया सी, (2)
दर्श तेरे बिना रूह मुरझावे जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

6. प्यार दा पुजारी दाता अजायब जी सदावें तूं, (2)
सागर प्यार दा कृपाल जिनूं गावें तूं, (2)
ओसे प्यार नूं 'गुरमेल' कुरलावे जी, उम्रां तां लंघ चलियां.....

दुःख कीनूं दस्सां

दुःख कीनूं दस्सां, वे मैं दुःख कीनूं दस्सां,
दुःख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता मेरेया,
दुःख कीनूं दस्सां, वे मैं दुःख कीनूं दस्सा,

1. भरया प्याला पापां गमां नाल दातेया,
सुणदा नी कोई तेरे बाजों दुःख दातेया, (2)
करां अरजोई (2) तेरे तांईं मेरे दातेया,
दुःख कीनूं दस्सां, दिल वाले .....

2. जीव हां निमाणा, कोई शहंशाह तां हां नहीं,
छोटी जेही औकात मेरी, समझदा वी हां नहीं, (2)
छड दित्ता जित्थे (2) ऐहे फानी संसार आ,
दुःख कीनूं दस्सां, दिल वाले .....

3. संसार विच दाता, जदों तूं विसारेया,
दुःखां दे खजाने भरे, मेरे कोल दातेया, (2)
झाक इक वारी (2) मेरे वल्ल मेरे दातेया,
दुःख कीनूं दस्सां, दिल वाले .....

4. खुशी सुख हासा, मौज मस्ती की हुंदे ने,
मंदभागे जीव, काल नगरी च रोंदे ने, (2)
जख्मी है दिल (2) तन रोगां ने है खा लया,
दुःख कीनूं दस्सां, दिल वाले .....

5. सुण लै पुकार, अजायब कृपाल दे दुलारेया,
ओही हां मैं जीव, जिनूं 'गुरमेल' सी पुकारेया, (2)
रख लै तूं रख (2) पत्त मेरी ओ दातारेया,
दुःख कीनूं दस्सां, दिल वाले .....

धन्य अजायब

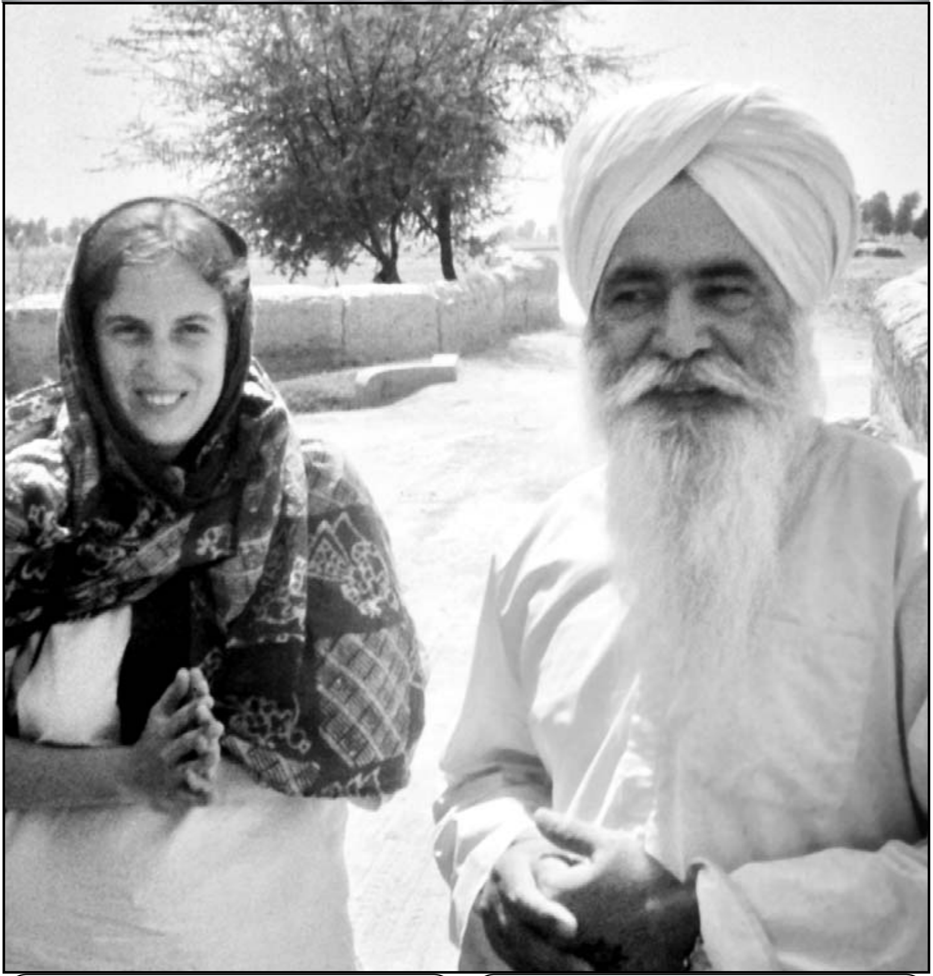

16 पी.एस.राजस्थान आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम :

30 नवम्बर और 01 व 02 दिसम्बर 2018

02 से 06 फरवरी 2019

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम :

भूरा भाई आरोग्य भवन

शान्तिलाल मोदी मार्ग(नजदीक मयूर टाकीज)

कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई – 400 067

98 33 00 40 00, व 022–24 96 50 00

9 जनवरी से 13 जनवरी 2019